69

क्या आपने अपना एलबस्टर वाला डिब्बा 'तोड़ा है?

मत्ती 26:6-13; मरकुस 14:3-9; यूहन्ना 12:1-8, एक निकट दृष्टि

मत्ती 26, मरकुस 14 और यूहन्ना 12 में लिखित घटना की तरह कुछ घटनाओं ने यीशु को प्रभावित किया। शायद वह इसलिए प्रभावित हुआ, क्योंकि क्रूस में कुछ ही दिन बचे थे और उसका मन अब पहले से ज्यादा परेशान था। हो सकता है कि वह अपने शत्रुओं की घृणा (मरकुस 14:1, 2) और उस अवसर पर दिखाए गए प्रेम के बीच स्पष्ट अन्तर से दुखी हुआ हो। वह इसलिए भी प्रभावित हुआ होगा, क्योंकि उसका जीवन देने में ही बीता था पर, कभी किसी ने उसकी सराहना नहीं की थी। जो भी कारण रहा हो, मसीह अपनी सेवकाई की सबसे अधिक प्रशंसा व्यक्त करने के लिए प्रेरित हुआ था।

घटना उस समय घटी, जिसे कुछ लोगों ने, ''अन्तिम भोज के बाद'' का नाम दिया है।[2] हमने अन्तिम भोज के बारे में सुना है, पर हमें अन्तिम भोज की अगली बात का भी पता होना आवश्यक है। दोनों में ही एक यादगार है। अन्तिम भोज के समय, यीशु ने प्रभु भोज की स्थापना की और कहा था, ''मेरे स्मरण के लिए यही किया करो'' (लूका 22:19)। अन्तिम भोज की अगली घटना के दौरान, मसीह ने कहा, ''सारे जगत में, जहां कहीं सुसमाचार प्रचार किया जाएगा, वहां उसके इस काम की चर्चा भी उसके स्मरण में की जाएगी'' (मरकुस 14:9)।

अब तक, आपने अनुमान लगा लिया होगा कि यह घटना मरियम के यीशु का अभिषेक करने की है, जो सुसमाचार के वृत्तांतों की सबसे सुन्दर कहानियों में से एक है। आइए पहले पात्रों और परिस्थिति को मन में बिठाते हैं; फिर इसकी प्रासंगिकता बनाएंगे। पहले हम घटना के मरकुस के वृत्तांत का इस्तेमाल करेंगे,[3] परन्तु अतिरिक्त विवरणों के लिए हम यूहन्ना के पास जाएंगे।[4]

कहानी आरम्भ होती है, ''जब वह बैतनिय्याह में शमौन कोढ़ी के घर बैठा हुआ था ...'' (मरकुस 14:3क)। यीशु फसह के लिए यरूशलेम में आया था। यूहन्ना के अनुसार, यह पर्व के ''छह दिन पहले'' की बात है (यूहन्ना 12:1)। अपनी आदत के अनुसार, मसीह यरूशलेम के पश्चिम में लगभग दो मील दूर बैतनिय्याह के छोटे से नगर में समय बिता रहा था।

बैतनिय्याह में वह अक्सर मरियम, मारथा और लाज़र के घर ही ठहरता था (देखें लूका 10:38; यूहन्ना 11:1, 5; 12:1); परन्तु इस अवसर पर, ''शमौन कोढ़ी'' ने उसे भोजन पर बुलाया हुआ था। हम मान सकते हैं कि शमौन *शुद्ध हो चुका* कोढ़ी था, वरना लोग इस बीमारी से पीड़ित व्यक्ति के साथ *न खाते*। बेशक भोजन करने के लिए आने वालों में लाज़र (यूहन्ना 12:2); मारथा जो (सामान्य की तरह) सेवा कर रही थी (यूहन्ना 12:2; देखें लूका 10:40); मरियम (यूहन्ना 12:3); और मसीह के चेले (मत्ती 26:8) सम्मानित अतिथि थे।

इस दृश्य की कल्पना करें: अतिथि अपनी बाईं कोहनियों पर टेक लगाए दाहिने हाथ से खाते हुए एक छोटे से मेज़ के इर्द-गिर्द झुके हुए हैं (मरकुस 14:3ख)। भोज के दौरान किसी समय, शमौन ने कोढ़ से भरे शुद्ध, स्वस्थ शरीर को दिखाने के लिए अपने वस्त्र को उठाकर, प्रभु द्वारा चंगा होने की बात बताई होगी। परन्तु सबसे अधिक प्रभावित करने वाला वाचक लाज़र होगा। ''मैं आपको बताता हूं कि मुर्दों में से जी उठना कैसा होता है!'' उसने कहा होगा। उसने मरने और उसके भीतर के अन्धकार की पीड़ा बताई होगी।[5] ''परन्तु फिर'' मैं उसे कहते सुन सकता हूं, ''दूर से एक आवाज़ सुनाई दी 'हे लाज़र, बाहर निकल आ' [यूहन्ना 11:43] और मेरी काया में जीवन लौट आया!'' लाज़र के कफ़न की बड़ी-बड़ी पट्टियों में लिपटे, कब्र से निकलने को याद करके कमरा ठहाकों से भर गया होगा। यह शाम कितनी रंगीन होगी!

इन सब के बीच में, मरियम-वही शांत मरियम सब देख रही थी। उसने सेवा में मारथा की सहायता की होगी (देखें लूका 10:40), परन्तु उसका ध्यान अपने प्रभु पर ही था। उसके मन में प्रेम उमड़ रहा था। वह अपने मित्र का धन्यवाद करना चाहती थी, जिसने उसके भाई को जीवन दिया था। शायद वह बोलने में इतनी अच्छी नहीं थी; वह अपनी भावना को कैसे दिखा सकती थी? एक विचार आया: किसी विशेष अवसर के लिए अलग से अलमारी पर रखे गए एक पात्र ''संगमरमर की शीशी'' का ध्यान आया, जिसमें ''जटामांसी का आध सेर बहुमोल इत्र'' था (मरकुस 14:3; यूहन्ना 12:3)।

यह इत्र भारत से आयात किया गया एक दुर्लभ पौधे का तेल और सुगन्धित द्रव्य था, जो बहुत महंगा होता था। आम तौर पर शव को दफ़नाने के लिए तैयार करने के समय इस इत्र का इस्तेमाल किया जाता था।[6] मरियम का इत्र संगमरमर की एक शीशी में रखा गया था। यह संगमरमर (एलबस्टर) पश्चिमी मिस्र से आयात किया गया सफेद संगमरमर था।

मरियम उस पात्र को लेने के लिए भागी और इसे हाथों में पकड़कर, भोज वाले कमरे

में ले आई। मरियम को "पात्र तोड़कर इत्र" प्रभु पर उण्डेलते देख (मरकुस 14:3) लोगों के मुंह खुले के खुले रह गए होंगे और सन्नाटा छा गया होगा। यदि वह ढक्कन खोलकर कुछ बूंदें यीशु के सिर पर डालती तो वहां उपस्थित लोगों को कोई हैरानी नहीं होनी थी (देखें लूका 7:46), परन्तु उसने तो पात्र ही तोड़ दिया था।[7] प्रेम और धन्यवाद व्यक्त करने का इससे बड़ा तरीका कोई और नहीं था।

मरकुस के अनुसार, उसने इत्र मसीह के सिर पर उण्डेला (मरकुस 14:3), जबकि यूहन्ना ने अवलोकन किया है कि उसने उसके पांवों पर उण्डेला (यूहन्ना 12:3क)। आज हम कह सकते हैं कि उसने "सिर से लेकर पांव तक" उसका अभिषेक किया। फिर उसने "अपने बालों से उसके पांव पोंछे, और इत्र की सुगंध से घर सुगन्धित हो गया" (यूहन्ना 12:3ख)।[8]

इस पर, उसका साहस देखकर शांत हुए लोगों को बोलने का बहाना मिल गया:

> परन्तु कोई-कोई अपने मन में रिसियाकर कहने लगे, इस इत्र का क्यों सत्यानाश किया गया? क्योंकि यह इत्र तो तीन सौ दीनार से अधिक मूल्य में बेचकर कंगालों को बांटा जा सकता था, और वे उस को झिड़कने लगे (मरकुस 14:4, 5)।

यूहन्ना के अनुसार, यह आलोचना सबसे पहले यहूदा ने की थी (यूहन्ना 12:4, 5)।

एक दीनार आम मज़दूर की एक दिन की मज़दूरी होता था (मत्ती 20:2)। तीन सौ दीनार एक मज़दूर की लगभग एक साल की मज़दूरी के बराबर थे।[9] आप जैसे भी गणना करें, इस इत्र की कीमत हज़ारों डॉलर में थी![10] आलोचकों को यह बहुत बड़ी बर्बादी लगी।

उन्हें लगा होगा कि प्रभु उनकी बात से सहमत हो जाएगा। आखिर उसका जीवन विलासिता से दूर एक साधारण व्यक्ति वाला था। वह बर्बादी के विरुद्ध शिक्षा देता था।[11] इसके अलावा वह निर्धनों पर दया दिखाने की भी शिक्षा देता था।[12] उन्हें लगा होगा कि यीशु उस स्त्री को डांटेगा। इसके विपरीत उसने उसकी सराहना की:

> उसे छोड़ दो; उसे क्यों सताते हो? उस ने तो मेरे साथ भलाई की है। कंगाल तुम्हारे साथ सदा रहते हैं:[13] और तुम जब चाहो तब उन से भलाई कर सकते हो;[14] पर मैं तुम्हारे साथ सदा न रहूंगा। जो कुछ वह कर सकी, उस ने किया; उस ने मेरे गाड़े जाने की तैयारी में पहिले से मेरी देह पर इत्र मला है (मरकुस 14:6-8)।

मसीह को वह बात पता थी, जिसका उन्हें ज्ञान नहीं था: वह जानता था कि उसकी अंतिम घड़ी आ चुकी है (यूहन्ना 12:23; 13:1; 17:1)। वह जानता था कि कुछ ही दिनों में उसे क्रूस पर लटका दिया जाएगा। मुझे नहीं लगता कि मरियम को अपने काम के सांकेतिक अर्थ की समझ थी। उसने तो केवल प्रेम और कृतज्ञता ही दिखाई थी, परन्तु यीशु

ने इसमें एक विशेष महत्व को देखा कि वह उसकी देह को दफ़नाने के लिए तैयार कर रही थी।

यीशु की मृत्यु और गाड़े जाने के समय पर विचार करें। सूरज ढलने से कुछ घण्टे पहले अर्थात सब्त का दिन आरम्भ होने से थोड़ी देर पहले उसकी मृत्यु हुई (लूका 23:54)। अरिमतियाह के यूसुफ ने उसका शव कब्र में रखा था। उसने और निकुदेमुस ने जल्दबाजी में इसे गाड़ने के लिए तैयार किया था, परन्तु गाड़ने के लिए पर्याप्त समय नहीं था।[15] इसलिए कई स्त्रियों ने, जिन्होंने यह देखा था, सब्त के बाद अधूरे काम को पूरा करने की मंशा से (लूका 24:1) "सुगन्धित वस्तुएं और इत्र तैयार किया" (लूका 23:56)। परन्तु जब वे सप्ताह के पहले दिन कब्र पर पहुंचीं, तो प्रभु की देह गायब थी (लूका 24:2, 3); वह जी उठा था (लूका 24:6)। उसकी देह को गाड़ने के लिए सही ढंग से तैयार करने का सब्त के पहले या बाद में समय नहीं था-परन्तु इससे कोई फर्क नहीं पड़ा। मरियम ने पहले से ही उसकी देह पर इत्र लगा दिया था।

प्रभु ने अन्त में कहा, "मैं तुम से सच कहता हूं, कि सारे जगत में जहां कहीं सुसमाचार प्रचार किया जाएगा,[16] वहां उसके इस काम की चर्चा भी उसके स्मरण में की जाएगी" (मरकुस 14:9)। जहां भी सुसमाचार पहुंचा है, पुरुषों व स्त्रियों ने मरियम के प्रेम की भेंट को पढ़ा है। उस टूटी हुई शीशी की सुगन्ध से बैतनिय्याह का वह घर ही नहीं, पूरा संसार महक गया है।

प्रासंगिकता

इस कहानी से हम क्या सबक सीख सकते हैं? कई सबक सुझाए गए हैं। हम तीन पर ही विचार करेंगे।[17] ये एक-दूसरे के साथ मेल खाते हैं, परन्तु हर एक का विशेष उल्लेख करना अच्छा है।

प्रेम अन्त में मितव्ययिता को देखता है

पहले तो, जो प्रेम करते हैं, वे अत्यधिक में अन्तत: मितव्ययिता को देखते हैं। यह विरोधाभास की तरह लगता है: *अत्यधिक* में *मितव्ययिता* कैसे हो सकती है? हर अत्यधिक में मितव्ययिता नहीं होती, परन्तु *प्रेम* की अभिव्यक्तियों में हो सकती है।

मेरी बात को समझने के लिए, कुछ पल के लिए अपने मन में कहानी के दो मुख्य पात्रों: मरियम और यहूदा में अन्तर करें।[18] दोनों प्रभु के चेले थे। दोनों उसके करीबी थे। दोनों उससे बात करते और उसकी सुनते थे। परन्तु दोनों में एक मूल अन्तर था: एक उससे प्रेम करता था, जबकि दूसरा नहीं। इसलिए एक के लिए अत्यधिक प्रेम की एक अभिव्यक्ति थी; दूसरे के लिए, यह बर्बादी थी।

क्या यह बर्बादी *थी*? मरियम उस इत्र का और क्या कर सकती थी? जैसा कि उसके आलोचकों ने सुझाव दिया था वह इसे बेचकर कंगालों को धन दे सकती थी। यह एक भला कार्य होता; क्योंकि हमें "कंगालों की सुधि" लेने को कहा गया है (गलातियों 2:10)।

परन्तु अन्त में, इसका पक्का परिणाम क्या होता? जैसा कि यीशु ने कहा, ''कंगाल सदा'' हमारे साथ रहेंगे। फिर, वह उस इत्र को अपने और अपने परिवार के लिए रख लेती। हम में से कुछ लोग ऐसा तर्क देंगे कि ''मैं अपनी चीज़ें दूसरों को क्यों दूं, जबकि *मुझे* खुद उनकी आवश्यकता है? पड़ोसी शमौन के पास एक नया रथ है और मेरा रथ तीन साल पुराना हो चुका है! मुझे एक नये रथ *की आवश्यकता* है!'' निश्चय ही वह उस इत्र को वहीं पर पड़ा रहने दे सकती थी, जिससे इस्तेमाल न होकर वह किसी के लिए आशीष का कारण न बनता। यदि वह इनमें से किसी विकल्प का फैसला ले लेती, तो संसार को यह न मिल पाता। हम में से हर कोई निस्वार्थ प्रेम के प्रेरणादायक उदाहरण से वंचित रह जाता।

एक क्षण के लिए, अपने जीवन की किसी विशेष घटना पर विचार करें। क्या आपके मन में कोई बात आई? यदि आई है, तो यह सम्भवतया ऐसा समय *नहीं* है, जब आपके आस-पास के सब लोग व्यावहारिक हों: ''मैंने अपनी कुछ सम्पत्ति ... या बिजनेस ... या गाय ... बेची है ... और मैं इससे मिला सारा धन बैंक में जमा कराने जाऊंगा, जहां से मुझे इसका ब्याज मिलेगा! यह ऐसे अवसर जैसा ही है, जब किसी ने आंखों में आंसू लेते हुए कहा हो, ''ऐसा न करो; ऐसा बिल्कुल न करना।''[19]

आप में से कइयों ने अपने बच्चों को स्कूल भेजने के लिए एलबस्टर के डिब्बे तोड़े होंगे,[20] चाहे वे कितने ही महंगे क्यों न हों। कलांतर में लोगों ने उन इमारतों को बनाने के लिए, जिनमें प्रभु के लोग इकट्ठे होते हैं, अपने एलबस्टर के डिब्बे तोड़े, चाहे वह उनका बलिदान था।[21] इसी कारण जीवनों में उन्हें आशिषें मिली हैं।

प्रेमहीनता को केवल बर्बादी दिखाई देती है

जो लोग प्रेम करते हैं, वे अत्यधिक में अन्ततः मितव्ययिता को देख सकते हैं, परन्तु जो प्रेम नहीं करते उन्हें यह दिखाई नहीं दे सकता, बल्कि उन्हें प्रेम की अभिव्यक्ति बर्बादी ही लगती है। उनमें अत्यधिक उपहारों को समझने की क्षमता नहीं है।

यूहन्ना ने उस मुख्य आलोचक के मन की स्थिति दिखाई है:

> परन्तु उसके चेलों में से यहूदा इस्करियोती नामक एक चेला जो उसे पकड़वाने पर था, कहने लगा। यह इत्र तीन सौ दीनार में बेचकर कंगालों को क्यों न दिया गया? उस ने यह बात इसलिए न कही, कि उसे कंगालों की चिन्ता थी, परन्तु इसलिए कि वह चोर था और उसके पास उनकी थैली रहती थी, और उस में जो कुछ जाता था, वह निकाल देता था (यूहन्ना 12:4-6)।

यहूदा को कंगालों की चिंता नहीं थी। वह तो इस बात को प्राथमिकता देता कि उस इत्र को बेचकर पैसे थैली में डाल दिए जाएं, जो उसके पास रहती थी। हैरानी की बात नहीं है कि उसे क्यों लगा कि मरियम की अत्यधिकता पैसे की बर्बादी है!

हम हर आलोचक पर यहूदा के कपटी उद्देश्यों का आरोप नहीं लगाएंगे, परन्तु फिर

भी यह सच है कि जब किसी के विचार दूसरे लोगों के बजाय अपने स्वार्थ के लिए होते हैं, तो उसे अत्यधिक उपहार पैसे की बर्बादी ही लगते हैं। अबिलेन क्रिश्चियन कॉलेज (अब यूनिवर्सिटी) में जाने से कुछ पहले मैंने जोअ के लिए मंगनी की अंगूठी खरीदी थी। यह अगूंठी किसी भी अर्थ में ज्यादा महंगी नहीं थी, पर इस के लिए संसार में जितना धन मेरे पास था उसका आधा लग गया था। मेरी आर्थिक तंगी और अन्य ज़िम्मेदारियों को ध्यान में रखते हुए, क्या किसी ने इसे अविवेकी माना हो सकता है ? शायद ... पर यह मेरे जीवन का सबसे अच्छा निवेश था।

सांसारिक मामलों में, जो लोग प्रेम नहीं करते, वे प्रेम की अभिव्यक्ति को व्यर्थ मानते हैं; यही बात प्रभु के काम के सम्बन्ध में भी पाई जाती है। लॉस एंजिल्स में बुज़ुर्ग मसीही स्त्री लगभग पूरा सप्ताह बिस्तर पर थी, परन्तु परमेश्वर की आराधना उसके लिए इतनी महत्वपूर्ण थी कि उसने कभी रविवार की आराधना में जाना नहीं छोड़ा था। उसके रिश्तेदारों में उसके जैसा धार्मिक जोश नहीं था। उनमें से किसी ने उससे कहा, ''मुझे लगता है कि जब तुम मरने लगोगी और कहीं चर्च जाने का समय हुआ, तो तुम उठकर चर्च चली जाओगी!''[22]

ओक्लाहोमा नगर का एक व्यापारी कलीसिया को चंदा देने में बहुत ही उदार था। उसके अकाउंटेंट ने उसे बताया, ''आप उससे अधिक दे रहे हैं, जितना सरकार की ओर से देने की अनुमति है। मेरा सुझाव है कि आप चंदा उतना ही दें, जिससे टैक्स बचाया जा सके।'' उस भाई का उत्तर था, ''चंदा मैं अपने प्रेम के कारण देता हूं, न कि टैक्स बचाने के लिए।'' जिन लोगों के मन में प्रभु के लिए प्रेम नहीं है, उन्हें उसके लिए प्रेम की अत्यधिक अभिव्यक्तियां हमेशा व्यर्थ और मूर्खता वरन पैसे की बर्बादी लगेंगी।

प्रेम अवसर का लाभ उठाता है

हमारा अन्तिम सबक बहुत महत्वपूर्ण है: सच्चा प्रेम अपने आप को व्यक्त करने के अवसर का लाभ उठाता है। अक्सर ऐसा अवसर बहुत कम आता है; एक बार हाथ से निकल जाने पर इसे दोबारा नहीं पाया जा सकता।

यीशु ने कहा कि मरियम ने ''मेरे गाड़े जाने की तैयारी में पहिले से मेरी देह पर इत्र मला है'' (मरकुस 14:8)। यदि इत्र के पात्र के पास पहुंचकर मरियम अपना मन बदल लेती तो क्या होता? यदि वह यह सोचकर चकित होती, ''मैं व्यावहारिक मारथा को इस अत्यधिक का क्या जवाब दूंगी?'' वह इस तर्क के साथ उस पात्र को वहीं पड़ा रहने दे सकती थी: ''जैसे ही यह उत्तेजनापूर्ण समय बीत जाएगा, मारथा, लाज़र और मैं परिवार के साथ बात करके फैसला करेंगे कि इस इत्र का क्या किया जाए। उनका विचार भी मेरे विचार से मेल खाता होगा। फिर हम अपने मित्र को यह उपहार अच्छी तरह पेश कर सकते हैं-फसह के तुरन्त बाद।'' मसीह को क्रूस पर देखकर और उस अवसर के खोने का विचार करके उसे कैसा लगता?

यह सम्भव है कि हम में से कइयों के पास अलमारी पर पीछे छिपाई हुई इत्र की शीशी

है, जिसे किसी ने छुआ नहीं, जो टूटी नहीं है और जो प्रभु और दूसरों के लिए नहीं, बल्कि हमारे अपने लिए है? यदि ऐसा है, तो मुझे आश्चर्य है कि अपने प्रेम और कृतज्ञता को व्यक्त करने का अवसर खो जाने के बाद न जाने हमारे कितने आंसू बह जाएंगे? मैं किसी पर दोष नहीं लगाना चाहता, पर सैकड़ों लोगों के जनाज़े देखे होने के कारण मुझे लगता है कि आंसू अक्सर असफलताओं पर यह कहने के लिए बहते हैं कि "मैं तुम से प्रेम करता हूं" या "तुम बहुत अच्छे थे।"

इस पर भी विचार करें: यदि प्रभु के लौटने पर, समय, गुणों, ऊर्जा और सम्पत्ति के इत्र की हमारी शीशियां अभी तक टूटी न हों, तो क्या होगा? कहने की आवश्यकता नहीं चाहिए, वे बेकार हो जाएंगी।

सारांश

यदि आप मुझे जानते होते तो आप यह नहीं जानते कि मैं बर्बादी की वकालत नहीं कर रहा हूं। न ही मैं यह सिफ़ारिश कर रहा हूं कि आप उस धन को खर्च करें, जो आपके पास है नहीं। मेरा सुझाव यह है कि प्रेम की अत्यधिक अभिव्यक्तियों के लिए अभी समय और स्थान है। विलियम बार्कले ने लिखा है, "प्रेम कभी हिसाब नहीं करता; प्रेम कभी यह नहीं सोचता कि अच्छी तरह कम से कम कैसे दिया जा सकता है; प्रेम की एक इच्छा सीमाओं से बाहर होकर लेना है; और सब कुछ दे चुकने के बाद, इसे लगता है कि अभी बहुत कम दिया है।"[23]

आपके मन में अत्यधिक प्रेम के कई उदाहरण आ रहे होंगे,[24] परन्तु सबसे बड़ा उदाहरण हमें दिए परमेश्वर के दान का है (यूहन्ना 3:16)। हमारे लिए अपने प्रेम के कारण प्रभु ने कीमत नहीं देखी। अब वह हमारी ओर देखता और कहता है, "जा, तू भी ऐसा ही कर" (लूका 10:37)।

इस पाठ को समाप्त करते हुए, हम प्रभु का निमन्त्रण देना चाहते हैं। एक पश्चात्तापी विश्वासी के रूप में आपको अपने विश्वास का अंगीकार करने और बपतिस्मा लेने का निमन्त्रण दिया जाता है (मरकुस 16:16; प्रेरितों 2:38)। यदि आप परमेश्वर के भटके हुए बालक हैं, तो आपको घर वापस आने की आवश्यकता है (प्रेरितों 8:22; 1 यूहन्ना 1:9)। प्रभु की आज्ञा मानने के लिए ऐसा करें, क्योंकि आज्ञा मानना आवश्यक है (इब्रानियों 5:8, 9) परन्तु इससे भी बढ़कर उसके लिए आपके *प्रेम* की अभिव्यक्ति के रूप में मानें (यूहन्ना 14:15; 1 यूहन्ना 5:3)।

टिप्पणियां

[1]इस प्रवचन का अधिकतर भाग विलियम एस. बेनोव्स्की, "ब्रेकिंग एल्बस्टर बॉक्सस," *सरमन्स ऑफ़ विलियम एस. बेनोव्स्की,* ग्रेट प्रीचर्स ऑफ़ टुडे सीरीज, अंक 11, सं. जे. डी. थॉमस (अबिलेन, टैक्सस: बिब्लिकल रिसर्च प्रेस, 1967), 20–27 पर आधारित है। [2]वही, 20. यह अन्तिम से पहला भोजन नहीं होगा,

जो यीशु ने *खाया,* परन्तु फसह के पर्व से पहले का यह एक *लिखित* अन्तिम भोज है। [3]मत्ती और मरकुस के वृत्तांत काफ़ी मिलते-जुलते हैं। मरकुस का इस्तेमाल करने का निर्णय जानबूझकर लिया गया। [4]मैं अपने सुनने वालों को दोनों हवालों पर चिह्न लगाने के लिए कहता हूं, ताकि जब मैं कहानी बताऊं तो वे आगे पीछे देख सकें। [5]क्योंकि पौलुस ने बाद में कहा कि जो कुछ उसने "तीसरे स्वर्ग" में देखा उसे बताने की उसे अनुमति नहीं थी (2 कुरिन्थियों 12:2-4), मृत्यु के बाद के जीवन के सम्बन्ध में लाज़र के विवरण शायद अस्पष्ट होंगे। [6]आश्चर्य होता है कि लाज़र के शव को तैयार करने के लिए इस शीशी का इस्तेमाल क्यों नहीं किया गया था। शायद परिवार के पास दो शीशियां थीं, जिसमें से एक उन्होंने लाज़र के लिए इस्तेमाल कर ली थी और एक बचाकर रखी थी। [7]बार्कले ने सुझाव दिया है कि मृतक की देह पर लगाने के लिए इत्र की शीशी इस्तेमाल करने के बाद, यह संकेत देते हुए कि मृतक के सम्मान में खर्च करने में कोई गुंजाइश नहीं छोड़ी गई है, वह शीशी गाड़े जाने के स्थान पर रख दी जाती थी (विलियम बार्कले, *द गॉस्पल ऑफ़ मार्क,* संशो. संस्क., द डेली स्टडी बाइबल सीरीज़ [फिलाडेल्फिया: वेस्टमिंस्टर प्रैस, 1975], 326)। [8]एक छोटे लड़के (एक सम्बन्धी) की एक कहानी है, जिसने अपने आप को एक दिन जब हम उनके घर गए अपने पिता के नहाने के लिए रखे गए सुगंधित पानी में डुबो लिया। हमारे कमरे में प्रवेश करने पर, कमरा महक से "भरा हुआ था"! आपको ऐसा ही कोई अनुभव हो सकता है, जो आप अपने सुनने वालों को बता सकें। [9]NIV बाइबल में "एक से अधिक वर्ष की मज़दूरी" है। [10]आपके समाज में साधारण मजदूर की एक वर्ष की मज़दूरी बताई जा सकती है। अमेरिका में, बावन सप्ताह के कम से कम मज़दूरी समय को अड़तालीस घण्टों के सप्ताह से गुणा किया जा सकता है।

[11]उदाहरण के लिए, पांच हज़ार को खिलाने के बाद, उसने बचे-खुचे टुकड़े इकट्ठे करवाए थे (मत्ती 14:20)। [12]उदाहरण के लिए, देखें मत्ती 19:21; लूका 14:13. कई विद्वानों के अनुसार, फसह की एक विशेष बात निर्धनों को दान देना थी। [13]देखें व्यवस्थाविवरण 15:11. [14]परमेश्वर हम से *चाहता है* कि हम निर्धनों के साथ भलाई करें (नीतिवचन 19:17; गलातियों 2:10)। [15]यूसुफ और निकुदेमुस ने थोड़े से समय में जो कुछ उससे हो सका, किया (यूहन्ना 19:38-40), परन्तु स्पष्टतया उन्हें काम अधूरा छोड़ना पड़ा था। जो स्त्रियां यह सब देख रही थीं, उन्होंने काम को पूरा करने का निश्चय किया था। लूका 23:53-24:1 का महत्व यही लगता है। [16]इन शब्दों में बड़ा विश्वास और भरोसा जताया गया है। इसी लहजे में, यीशु ने अपने गाड़े जाने की और उस सुसमाचार की जो संसार में ले जाया जाना था, बात की थी। इस प्रकार उसने अपने पुनरुत्थान में और संसार में सुसमाचार ले जाने में अपने चेलों पर भरोसा जताया था। [17]यह पाठ बेनोव्स्की, 23-26 से लिए गए हैं। [18]कई चेले यूहन्ना के साथ थे, पर आलोचना करने में यहूदा ने अगुआई की। [19]मुझे अपने जीवन के कई उदाहरण ध्यान में आते हैं, आपको भी आते होंगे। [20]जहां मैं रहता हूं, वहां हम क्रिश्चियन कॉलेज या यूनिवर्सिटी की बात कर सकते हैं।

[21]पिछले दो वाक्यों का उद्देश्य यह समझाना है कि पूरी मण्डली के लिए यह कैसे प्रासंगिक बनाया जा सकता है। जहां आप रहते हैं, वहां की संस्कृति को ध्यान में रखकर इसे अपनाएं। [22]यह और अगला उदाहरण बेनाव्स्की, 24-25 से लिए गए हैं। [23]विलियम बार्कले, *द गॉस्पल ऑफ़ मैथ्यू,* अंक 2, संशो. संस्क. द डेली स्टडी बाइबल सीरीज़ (फिलाडेल्फिया: वेस्टमिंस्टर प्रैस, 1975), 330. [24]इसका एक या दो उदाहरण देने के लिए आप यहां रुक सकते हैं। यदि इस पाठ का इस्तेमाल पुलपिट के बजाय क्लास के लिए किया जाता है, तो क्लास के सदस्यों को ऐसी घटनाओं के विवरण बताने के लिए कहा जा सकता है।